सत्य का पुजारी

लेखक : पंडित श्री गणेश प्रसाद शुक्ल, रिटायर्ड स्टेशन मास्टर

प्रथमहिं क़लम लिखे लेखक की
बिस्मिल्ला रहमाने रहीम
अस्सलाम फिर पैग़म्बर को
जिन पर किरपा करत करीम

लाय सुनाये रूच ज़मीं पर
अल्ला ताला के पैग़ाम
अता किया फिर जिन्हें खुदा ने
कल्मा और दीन इस्लाम

हो रसूल की हम्दो सना क्या
लिखते सिफत क़लम थर्राराय
ताबे क़यामत दो जहान के
आलिम कहें कही ना जाय

है वजिन्स तारीफ़ मुहम्म्द
जिनकी उम्मत धार्मी वीर
हुए एक से एक जिहादी
जिनमें सर्व श्रेष्ट शब्बीर

लख्ते जिगर फ़ातिमा के
नाती रसूल के थे सरदार
जो अपने इस्लाम दीन पर
पराधीन हो हुये निसार

जिसने जीत लिये सबके दिल
करके प्यार नेक व्यवहार
सचाई से डिगे न चाहे
हो गरदन पर झुकी कटार

दुनिया जिसकी यादगार में
करे ताज़िया दारी आज
मुस्लिम क्या हिन्दू भाई के
घर घर में है कहीं रिवाज

सहे कष्ट जो दीन बचाते
आते याद दहला दिल जाय
पत्थर से भी कठिन कलेजा
पिघला देतीं आंख बहाय

आज यहां मुख्तसिर कहानी
मरदाने की करू बयान
थाम कलेजा ले हाथों से
चाहें जो कि सुने बलिदान

अरब देश में दूर दूर जब
फैल चुका मज़हब इस्लाम
सन् चालिस हिजरी में थे
कूफ़ा के हज़रत अली इमाम

हज़रत के शहीद होने पर
हुये हसन दूसरे इमाम
गुल ज्यों खिलें बहार आने पर
त्यों खिल खिला उठा इस्लाम

उन्हीं दिनों माविया नाम का
था कूफ़ा में हाकिम एक
दिल का हसदी पापी दोषी
ऊपर मेहरबान और नेक

अपनी शतरंजी चालों में
उसने लिया हसन को फांस
मुंह में शीरीं सखुन मगर थी
दिल में कुछ ज़हरीली गांस

बुलवा भेजुंगा हुसैन को
देंगे जैसी आप सलाह
बाद हमारे फिर कूफ़ा के
होंगे वही ख़लीफा वाह

हसन खुशी से त्यागि ख़िलाफत
हुये इबादत में मश्ग़ूल
हरे भरे इस्लाम चमन में
दिन दिन लगी बरसने धूल

मौक़ा पाते ही ज़ालिम ने
दिया हसन को ज़हर दिलाय
फिर अपने बेटे यज़ीद को
वहीं ख़लीफा दिया बनाय

कोशिश करके बड़े बड़ों से
बैअत काग़ज़ लिए लिखाय
इसी तरह धोखे बाज़ी से
लिया दमिश्क शाम अपनाय
फिर क्या कहना है यज़ीद का
जब पाया मर्तबा बलन्द
आवारा ऐयाश शराबी
पहले से अब हुआ दुचन्द
होने लगे जमा दरबारी
चुग़ल खोर और नमक हराम
करे खुशामद जो यज़ीद की
बने मुसाहिब और हुक्काम
रैयत में अमीर ज़ादो की
होती इज़्ज़त खातिर बात
दुखियारे ग़रीब फ़रियादी
पाते दर दर जूता लात
खुले आम सड़कों पर अब तो
खोलें जुवा जुवारी लोग
है न यहां इस्लाम धर्म की
छीछा लेदर कहने योग
जहां तहां बेटी बहनों की
इज़्ज़त लोग बचाते भाग
लगी फैलने जब यज़ीद के
जुल्मों की बुनियादी आग
तंग आगये कूफ़ा वाले
सब यों करने लगे सलाह
पार लगेगी नाव किस तरह
बीच धार से बिना मलाह
दुनिया में हुसैन से बढ के
कौन नमाज़ी रोज़ेदार
दीन दार इस्लाम धर्म पर
जो खुद को कर सके निसार
अल्लाह वाले नेक तबीयत
दिल में दरदीलों की आह
वही बचा सकते हम सब को
बतला सकते नेक सलाह
नामें में दिल खोल लिख दिया
सब यज़ीद का कच्चा हाल
फिर अपना दुख भरा कलेजा
काग़ज पर रख दिया निकाल
नामा पढ़ते ही हुसैन के
दिल पर गयी मुर्दनी छाय
दुर्गत से इस्लाम बचे
किस तरह सोचने लगे उपाय
चचा ज़ात भाई मुस्लिम को
फौरन अपने पास बुलाय
भेज दिया कूफ़ा नगरी को
सब प्रकार समझाय बुझाय
मुस्लिम के आते कुफ़ा वालों
के पड़ी जान में जान
मस्जिद से अब दूर दूर तक
फिर सुन पड़ने लगी अज़ान
मस्जिद में पांचों वक्तों की
सब जमात में पढ़े नमाज़
गूँज उठी इस्लाम धर्म की
फिर चौतरफ़ा वही आवाज़
जब यज़ीद को मिली ख़बर
फ़िलफ़ौर शहर कोतवाल बुलाय
हुक्म दिया मारो मुस्लिम को
गद्दारी का ऐब लगाय
हुआ हुक्म तामील लिया
मुस्लिम का फौरन शीश उतार
बेरहमी से मुस्लिम के
दोनों बेटे भी डाले मार
फिर भी हुयी न पूरी हसरत
उस ज़ालिम यज़ीद की हाय!
पास मदीने के हाकि़म को
भेजा परवाना लिखवाय
बैयत लिखवा लो हुसैन से
वरना करदो काम तमाम
ढोंगी है इस्लाम धरम को
करता है नाहक़ बदनाम
परवाना पाकर वलीद ने
बुलवाया हुसैन को पास
कहा पढ़ो यह परवाना है
बैयत लिख दो हो न उदास
पढ़कर शाही हुक्म हुआ
हज़रत हुसैन का अबतर हाल
जान माल का ख़ौफ न था
था नाना की इज्ज़त का ख्याल

दिल पर क़ाबू पा हुसैन
बोले वलीद से सुनें जनाब
सोंच समझ कर ही शायद
परवाने का दे सकूँ जवाब
यह कहकर हज़रत हुसैन
वापस चल पड़े मक्का की ओर
डगमग पड़ते पैर राह में
क्यों कि घुसा था दिल में चोर
सारा कुनबा बुला शाम को
सभी कैफियत कही सुनाय
ख़तरे में इस्लाम जान है
हज़रत की सुनि गये सुखाय
जान बचायें भाग मदीने से
यह सब की हुयी सलाह
यह सुन कर हज़रत फिर बोले
भर कर दुख की ठंडी आह
जान बचायें भाग अगर हम
करें कंही कायर का काम
छूत लगे इस्लाम पाक में
डूब जाय नाना का नाम
जिसे आप बुज़दिली बताते
कहें इसे मौक़ा या घात
जैसे भी हो सके बनानी
हमें चाहिए अपनी बात
जान रहेगी तब ही तक तो
बचा सकेंगे हम इस्लाम
वरना कौन रसूलिल्ला के
बजाला सकेगा एहकाम
इधर बुज़ुर्गी का कहना
होता है हज का उधर सवाब
सोंच समझ हज के मौसम में
मक्के को चल पड़े जनाब
ख़बर वहां की सब वलीद से पा
यज़ीद ने खा कर ताव
भेजे कुछ पाजी मक्के को
बने हुये हाजी से भाव
रहे ताक में वह हुसैन की
मौक़ा मिले कि करदे वार
मगर कौन बे वक्त किसी को
बिला क़ज़ा के सकता मार

दिल ने दी बतला हुसैन को
होनहार दुश्मन की घात
जैसे कोई कभी किसी के
कान लगा मुह कहदे बात
दिल में लगे सोचने हज़रत
मेरी जान रहे या जाय
लेकिन नाना की, काबा की
अज़मत में न दाग़ लग जाय
हुये शहीद यहां हम तब तो
होगा सब पर ख़ून सवार
वे सब मेरे लिये मरेंगे
जिनसे है कुछ भी व्यवहार
ऊच नींच सब सोंच समझ
हज़रत कूफ़ा को हुये तयार
हाथ जोड़ कर इब्ने हन्फिया
बोला सुनिये विनय हमार
कूफ़ा जाने का विचार
बेहतर करदें मुलतवी जनाब
कूफ़ी बड़े निठुर छालिया हैं
बड़े बेवफा बड़े ख़राब
क़ातिल हैं इमाम हैदर के
सब बे रहमी के अवतार
सब खिलाफ इस्लाम धरम हैं
सब यज़ीद के ताबेदार
काबे से जाना ही है तो
चले जाइये आप यमन
वहां अली के हामी हैं सब
मुसलमान हैं नेक चलन
इब्ने हन्फिया की बातें सुन
बोले विहंसि इमाम हुसैन
भाइ! होनी होके रहेगी
वृर्थ्रा हो रहे हो बेचैन
अब शहीद होना होगा
इस्लाम धर्म पर हमें ज़रूर
होता है वह ही दुनिया में
जो है मालिक को मन्ज़ूर
एक रोज़ मरना ही है
तब क्यों न मरे हक़ पर इन्सान
चमका दूं इस्लाम न क्यों फिर
हंसी ख़ुशी होकर बलिदान

इतना कह कर ही हुसैन ने
ली कूफ़ा की सीधी राह
दुखी हुये सब बीच धार ज्यों
डूबे नय्या बिला मलाह
जो हुसैन के रहे संघाती
साथी सच्चे ताबेदार
वे सब उनके साथ हो लिए
जो थे दिल के खुद मुख़्तार
लौटाना चाहा हुसैन ने
वे बोले सुनिये सरकार
जहां पसीना गिरे आपका
वहां बहेगी ख़ूं की धार
आख़िर मजबूरी दरजे में
लिया सभों को साथ लिवाय
चले क़ाफिला ले मक्के से
काबे में सिजदा करवाय
पैदल चलते हुए धूप में
देखा सब ने खाया ताव
रहम दिली ने किया तक़ाज़ा
वहीं छांह में पड़ा पड़ाव
बड़े अदब से अरब मुसाफिर ने
की आकर अलैक सलाम
पेश आय हज़रत ख़ातिर से
जैसे हैं उसूल इस्लाम
उसने कहे हाल कूफ़ा के
जैसे मुस्लिम हुये शहीद
बेटों का कर ख़याल कह उठा
उफ! ज़ालिम बदकार यज़ीद
रो, रो, कहते हुये मुसीबत
लिया कलेजा थाम उसांस
था न क़ाफिले में कोई
जो रोया हो न रक्त के आंस
मुस्लिम की बीबी की हालत
क्या कहकर बतलाऊँ हाय
सुनते ही बेहोश हुयी वह
छाती पीट पछाड़ें खाय
देख बहन की अबतर हालत
और सबों को भी बेचैन
मरने जीने का मसला
सब को समझाने लगे हुसैन

कौन जहां चक्की में पड़कर
हुआ न पिसकर चकना चूर
आयेगा फानी दुनियां में
जाना होगा उसे ज़रूर
अमर नाम कर जाता है
जो मरता है हक़ पर इन्सान
यही बताता है कुरान और
यही बताते वेद पुरान
रोते समझाते पहाड़ सी
बीती रात हुआ जब भोर
मशरिक़ की नमाज़ पढ़कर
चल दिया क़ाफ़िला कूफ़ा ओर
अन्क़रीब तैतीस मील जब
होगी कूफ़ा नगरी दूर
कहा किसी ने धूल देखा
हैं आंधी के आसार हुज़ूर
चन्द मिनट के अन्दर ही
लश्कर तक़रीबन एक हज़ार
लिये सामने आ पंहुचा
ज़ालिम यजीद का हुर सरदार
कड़क रही थी धूप बला की
सभी हो रहे थे बेचैन
सूख रहे थे होंठ प्यास से
देख तरस खा गये हुसैन
थोड़ा था सामान सफ़र का
थोड़ा ही था पानी पास
फिर भी हज़रत ने उन सब की
पानी पिला मिटाई प्यास
जरा सोचिए है भी कोई
ऐसा दानी सिवा हुसैन
दुश्मन की मेहमानी कर दे
अपना भी न हो ख़्याल जिसेन
पानी पीकर दम लेकर फिर
बोला हुर यूँ सुनों हुसैन
तुम यज़ीद के क़ैदी हो अब
बैयत ही है मक़सद ऐन
जान बचानी हो तुमको तो
बैयत लिख कर करो सलाम
रहो जहां जी चाहे फिर तुम
हंसी खुशी से बने इमाम

मुस्का कर बोले हुसैन
है बैयत करने से इन्कार
मार डालने की धमकी देना
भी है भाई बेकार
मार डालना और जिलाना
अथवा करना माफ क़सूर
होता है सब हुक्म खुदा से
नहीं दूसरे का मक़दूर
रोक दिया हुर ने हज़रत को
उसी जगह सुन तल्ख़ ज़बान
जहां करबला का पड़ता था
बड़ा भयानक रेगिस्तान
आंवा सी तम्बुआ कनात थी
तावा सी तप रही ज़मीन
फूंक रही थी आग लूक सी
बैठी मलकुल मौत कमीन
ऐसी गर्म रेत थी जिसमें
गिरते ही अनाज भुन जाय
दुश्मन को भी दे न खुदा
यह सज़ा यहां पल भर ठहराय
थी अँगार सी धूप दहकती
चलती आंधी उड़ती धूल
फिर भी सब मज़लूम खुदा की
रहे इबादत में मशगूल
चार पांच दिन इसी तरह
बीते आगयी मुहर्रम सात
अब तक भी हज़रत हुसैन ने
मानी नहीं सुलह की बात
उसी सातवीं को मुस्लिम का
क़ातिल बिन ज़याद बदकार
उमर साद के बेटे को ले
लाया लश्कर बीस हज़ार
चौ तरफ़ा डेरे हुसैन के
उसने घेर लिए चुप चाप
और फ़ुरात नदी की भी
वह करने लगा चौकसी आप
खाने से मज़बूर रहे अब
पानी से भी हैं लाचार
हुआ ज़ालिमों का कैसा
यह मज़लूमों पर अत्याचार
सूख रहे थे हलक़ सबों के
बच्चों की थी दशा अजीब
अम्मा ज़रा पिला दो पानी
रो, रो, कहते रहे ग़रीब
पत्थर ही छाती पर रखकर
सुनती मातायें असहाय
करतीं क्या, बस, रो देतीं थी
बस, क्या था, रोने के सिवाय
बीती निठुर आठवीं लायी
नवीं मुहर्रम दुख घन घोर
इधर पढ़ रहे थे नमाज़ सब
उधर लड़ाई का था शोर
फर्ज़ अदाई करने हज़रत
आये सरदारों के पास
बोले उम्मत जिसकी हो तुम
हम हैं उसके नाती खास
हम से करना जंग तुम्हें वाजिब हो
तो तुम करो ज़रूर
मगर कहो किस लिये हमें
करते हो, लड़ने को मजबूर
कहां बहत्तर भूखे प्यासे
कहां हज़ारों की यह फौज
रोक सकें बालू के ज़र्रे
कैसे रण दरिया की मौज
हक़ नाहक़ हम दुखियारों का
ख़ून बहा कर ऐ सरदार
कहो कौन मुह लेकर जाओ गे
उस मुन्सिफ़ के दरबार
ग़ौर करो तुम सही ग़लत
कुछ भी जैसी हो सब की राय
मगर आज की मोहलत हम को
अगर हो सके दे दी जाय
इतना सुन कर सरदारों ने
ढीली कर दी चढ़ी कमान
जाने कया था असर ज़बां में
जो हैवान बने इन्सान
इस में भी मसलहत खुदा ही
की होगी कुछ अजी जनाब
वरना हज़रत बदकारों से
पाते शायद साफ जवाब

वापस आ हुसैन ख़ेमे में
बोले सब को पास बिठाय
है मुसीबत से बचने का
बस नमाज़ ही एक उपाय
फिर क्या था सब हुये इबादत में
लयलीन दीन ग़मख्वार
आवाज़ें सुन पड़ें, रही हों
जैसे मधु मक्खी गुंजार
इसी तरह जब यादे खुदा में
बीत चली थी आधी रात
बोले करते हुए मुखातिब
सब से हज़रत सच्ची बात
राहे रास्त इस्लाम धर्म पर
कल होना है मुझे शहीद
क्योंकि हमारे ही खूं का है
प्यासा वह बदबख्वाह यज़ीद
तुम सब नाहक ही देते हो
मेरी एक जान पर जान
बुझे हुये हैं दिये देख लो,
हैं सब राहें भी सुनसान
सुनते ही सब लोग जोश में
आकर बोले जोड़े हाथ
सौ, सौ बार जलें ज़िन्दा पर
मुमकिन नहीं कि छोड़ें साथ
इसी समय नौकर बेटे को
लेकर आया हुर सरदार
हज़रत के क़दमों पर गिर कर
बोला माफ़ करें सरकार
होने को हक़ पर निसार
हज़रत ने बना लिया इन्सान
पानी दिखा, चुका दूंगा
जो पानी पिला किया एहसान
तुम्हें खुदा ही ने बख़्शा है
आओ, बैठो, पढ़ो नमाज़
शुरू इबादत इधर हुयी
और उधर आगये तीरन्दाज़
पौ फटते फटते जमात पर
लगे बरसने तीखे तीर
फ़ौरन ही हुसैन के आगे
तन कर खड़े हुये दो वीर
सीने ही को सिपर बनाकर
सहने लगे चोट पर चोट
वाह, खूब शाबाश न लगने
दी हुसैन को ज़रा खरोट
पूरी हुयी नमाज़ चल पड़ा
बेटे को ले हुर सरदार
लड़ने लगा जवांमर्दी से
करने लगा वार पर वार
ज़रा देर में काट छांट कर
हुर ने किया करबला साफ
भाग रहे थे जवांमर्द सब
कहते हुये कीजिये माफ
हुर के बेटे चाकर की थी
जंग देखने के क़ाबिल
तीरो गुर्ज से दहल रहे थे
बड़े दिलेरों के भी दिल
डेढ़ पहर तक लड़े बराबर
ये तीनों जाबिर दिल खोल
आखिर हुये शहीद दीन पर
कर निसार जीवन अनमोल
अनस, इब्न हारिस, सवैद
विन उमर, और अबदुर्रहमान
नाफे, इब्न, हिलाल, हन्ज़ला
असद, जिन्हें था हिफ़्ज़ कुरान
मुस्लिम, इब्ने औसजा, आबिस
हमदानी बुरेर से वीर
सत्तर अस्सी साल उम्र में
खुली ज़ईफ़ी की तक़दीर
बांधि ढाल तलवार दुधारा
खन्जर बरछी तीर कमान
चले धन्य इस्लाम धर्म पर
ये सब होने को कुरबान
टूट पड़े इक साथ फ़ौज पर
ये सब अल्लाहु अकबर बोल
दिखला दिये जंग के जौहर
मर्दाने ज़ईफ़ दिल खोल
एक पहर तक लड़े बराबर
हमदानी हन्ज़ला बुरेर
जिधर देखिये उधर लगा था
दुश्मन की लाशों का ढेर

एक एक होकर शहीद सब
अमर कर गये अपना नाम
इधर अली अकबर क़ासिम ने
आ हुसैन को किया सलाम
इन दोनों के पीछे थे
ज़ैनब मुस्लिम के बच्चे चार
सीने से हज़रत ने सब को
लगा लिया और करके प्यार
बिठा दिया सबको घोड़े पर
खुद देकर नंगी शम्शीर
पिले दुश्मनों के लश्कर में
जैसे मछली पानी में
दिखा दिये वह हाथ हौंसले
दुश्मन भी कह उठे "कमाल"
ऐसा कोई था न फ़ौज में
जिसे खुन से किया न लाल
बच्चे ही थे कब तक लड़ते
भारी तीस हज़ार भी फ़ौज
फिर भी रहे खोलते जैसे
सौरी से दरिया की मौज
जो सब का होता है आखिर
इनका हुआ वही अन्जाम
सब सदके होते इमाम पर
इन पर सदके हुये इमाम
घर बाहर के सब शहीद हो चुके
बचे हज़रत अब्बास
क्योंकि मुहाफिज़ रहे यही
इस्लामी पाक अलम के खास
भूखा प्यासा देख सबों को
अब यह रह न सके ख़ामोश
चले अलम और मश्क़ साथ ले
दिल में नयी उम्र का जोश
खेमें से फरात दरिया तक
तर हो गयी खून से रेत
दुश्मन के सिर काट बो दिये
हों जैसे कद्दू के खेत
अलम संभाला मश्क भरी फिर
पलट पड़े पड़ाव की ओर
इतने में आगयी उमड़ती
दुश्मन की फ़ौजें घनघोर

हाथ कट गये मशक़ छिद गयी
गिरा ज़मीं पर अलम दबाय
कोशिश हुयी रायगां पानी
डेरे तक न सका पँहुचाय
खून उगल कर वही दिलावर
शेर शहीद हुआ तत्काल
हज़रत ने बिना कफ़न दफ़न के
शव छोड़ दिया दो आंसू डाल
खे़मे में आकर देखा
बे पानी के कुम्हलाया फूल
बाहर ले आये असग़र को
झूले में जो रहा था झूल
बच्चे की हालत दिखला
बोले हुसैन होकर मजबूर
मैं शायद हूँ गुनहगार
लेकिन इसने क्या किया कुसूर
मुझे नहीं, दो इसे खुदा के
सदके में पानी दो बूंद
सुनते ही रो दिये शत्रु भी
फेर फेर मुह आंखें मूंद
उसी समय जल्लाद हुरमुला ने
वह तक कर मारा तीर
जिस से हलक़ छिदा असग़र का
और हुये ज़ख़्मी शब्बीर
हाय बाप के हाथों पर ही
खून उगल कर बेटा आज
विदा सदा के लिये हुआ
बन अमर शहीदों का सरताज
सीने से ली लगा लाश
और खून भरा नन्हा मुंह चूम
सुला दिया फिर तहे खाक
लो झूले का सिंगार मासूम
इतने गहरे घाव लगे, पर,
उफ, न करे, यह कैसा धीर
शायद सब हो एक ज़बां
कह देंगे, वह होगा शब्बीर
मगर हरम में मां बहनों के
रोने से थे अबतर हाल
सब्र करें कैसे ग़रीब
जिन के खो जांय क़ीमती लाल

मरने जीने का मसला
समझा कर सब को छोड़ उदास
हज़रत ने तलवार ढाल ले
पकड़ी जुलजनाह की रास
''होशियार हों जवां मर्द''
यह जोश भरी देकर आवाज़
टूट पड़ ऐसे लश्कर पर
जैसे अबाबील पर बाज़
बाकि सियारों पर चीता
हिरनों पर हावी होकर शेर
कांट छांट सिर हाथ पैर धड़
लगा दिये लाशों के ढेर
सरपट भरता कभी चौकड़ी
ले चलता था दुलदुल चाल
मरते थे कितने टकरा कर
टापों से होकर पामाल
बिजली सी चमचमा तड़पा
नागिन सी लहराती तलवार
जिधर झुकी कर दिया सफ़ाया
समझे शत्रु खुदा की मार
थी सत्तावन साल उमर
और उस पर ज़ख्मों का यह हाल
तिल तिल बदन छिदा तीरों से
हुये खून से लालो लाल
उसपर भी जिस तरफ घूमते
कर देते थे मैदाँ साफ
भाग खड़े होते थे दुश्मन
कहते हुये कीजिये माफ़
दुश्मन पर खा तरस और फिर
सरे जंग भी करदे माफ़
यह हुसैन के सिवा किसी में
सुने, न हैं, देखो औसाफ
लड़ते लड़ते वक्त इबादत देख
उतर घोड़े से आप
वहीं रेत पर बैठ लगे
निर्भय नमाज़ पढ़ने चुपचाप
इधर सुनहरा मौक़ा पाकर
फिर दुश्मने जां बे चैन
हुये शहीद शिम्र के हाथों
सिजदा करते हुये हुसैन

जुलजनाह आया डेरे पर
रंजीदा बे ज़बां बसीठ
बतला दी हालत हज़रत की
दिखला अपनी खाली पीठ
हुये हुसैन शहीद जान कर
सभी हरम में रोईं खूब
यहाँ तलक तर अश्कों से
हो गयी ज़मीं उग आई दूब
आग लगा कर कुछ खेमों में
दुश्मन पड़े हरम पर टूट
बेरहमी से उतरा ज़ेवर
की सबने मन मानी लूट
वहीं पड़ा हुसैन का बेटा
था साबिर सज्जाद अलील
उस ग़रीब को सख्त सुस्त कह
किया सबों ने बहुत ज़लील
मां बहनों की कुछ हराम ज़ादों
ने लीं चादरें उतार
गड़ी शर्म से जाती थीं
बेपर्दा हुयी सब पर्देदार
पहना कर ज़ंजीर तौक़
ले चले क़ैदियों को हमराह
क़तल गाह में आ, अपनों की
लाशों पर जब पड़ी निगाह
आह सर्द भर ली, करते क्या
सब तो थे कैदी लाचार
शुक्र खुदा जो हुआ आख़िरी
वक्त शहीदों का दीदार
नेज़ें पर सिर ले हुसैन का
आगे चला शिम्र बेपीर
जिसे देख ग़म अहल बैत को
हो, औरों के लिये नज़ीर
पैदल ही दो दिन में आये
सब क़ैदी कुफा बाज़ार
शहेर घुमाकर दिखलाया फिर
बिन ज़याद का भी दरबार
कभी जहां के शहज़ादे थे
बने वहां ही क़ैदी आज
चुल्लू भर पानी को तरसे
दाने दाने को मुहताज

(बाक़ी पेज नं0 34 पर ....)

fatial tribute to her memory. He burst into tears on arriving at this trying place of tender effections.

अनुवादः–आपका (हज़रत मोहम्मद स.) का हृदय अपनी माता की क़ब्र पर पुत्र होने के नाते श्रद्धांजलियों के पुष्प चढ़ाने के लिए बेचैन हो गया अतएव आप उस स्थान पर पहुंचे जहां आप की प्रिय माता की क़ब्र थी और आप फूट फूट कर रोये।''

उपरोक्त स्थलों एंव घटनाओं से भली भांति विदित है कि विलाप करना बिदअत व पाप नहीं है, अपुति एक पुण्य कर्म है क्योंकि यह तो हज़रत मोहम्मद के द्वारा किये गये कर्मों के पालन हैं। अब आइये हज़रत मोहम्मद की पत्नियों के विलाप पर भी एक विहंग दृष्टि डाल लें। इसी अंग्रेज लेखक ने हजरत मोहम्मद की पत्नियों के विलाप को हज़रत मोहम्मद के देहान्त अवसर पर निम्न शब्दों में लिखा है :–

Ayesha outeries brought the other wives of Mohemet and their clamourous grief soon made the event khown throughout the city.

अनुवादः–आएशा की रोने की आवाज़ों को सुनकर हज़रत मोहम्मद स. की दूसरी पत्नियां भी आ गयीं तथा उनकी रोने की आवाज़ों ने रसूल स. की मृत्यु की ख़बर अतिशीघ्र शहर में पहुंचा दी।''

एंव जब रसूल स. के देहान्त का समाचार अबूबक्र ने हज़रत मोहम्मद स. के साथियों के समूह में सुनाया तब अरविंग लिखता हैः–

people (Sahaba) listened to Abubakar with tears and sobbings.

अनुवादः–लोग अबूबक्र की बात रो रो कर और सिसकियां लेकर सुन रहे थे।

अब तो सहाबा (हज़रत मोहम्मद के साथियों) के अनुयायी होने का दावा करने वाले भी विलाप पर आक्षेप नहीं कर सकते तथा रोने के विरोधी नहीं हो सकते।

उपरोक्त वर्णन से यह भली भांति स्पष्ट हो गया है कि रोना, विलाप करना आदि न तो स्वास्थ्य सम्बन्धी दृष्टिकोणानुसार ही हानिकारक है (बल्कि इस के विपरीत स्वास्थ्य के प्रति लाभप्रद है एंव न रोना ही रोगी एंव बुद्धिहीन होने का द्योतक है) तथा न रोना तो धार्मिक दृष्टिकोण से ही पाप है अपितु पुण्य है क्योंकि रोना हज़रत मोहम्मद का आदेश है तथा इसी रोने के लिये इमाम जाफ़रे सादिक़ ने कहा है :–

''रोये, रूलाए अथवा रोने वाले की सी मुखाकृति बनायें तो वह ज़न्नत का एवं जन्नत (स्वर्ग) उसकी है।''



(पेज नं0 42 का बक़िया.............)

सख़्त सुस्त कह बिन ज़याद ने
भेजा फिर यज़ीद के पास
सही वहां बेतरह मुसीबत
रह यज़ीद के क़ैदी खास

रोते इन्हें देख हंसता था
वह ज़ालिम जल्लाद यज़ीद
दुखद मोहर्रम मुज़लूमों का
बना ज़ालिमों के हित ईद

अहलेबैत ज़ालिम यज़ीद से
छुटकारा पाने के बाद
शाम देश से वापस आकर
हुये मदीने में आबाद

आज तलक जिस क़दर मुसीबत
सही हुये जिस क़दर ज़लील
ताक़त कहां क़लम जो लिखती
सब तकलीफ़ों की तफसील

याद शहीदों को करके सब
रोया करते थे दिन रात
हुयी यहां से दुनिया में
मजलिस मातम की शुरआत

राहे रास्त पर थे हुसैन
इस लिए अभी क़ायम है शान
मगर यज़ीदी खानदान का
मिटा जहां से नामों निशान

दुनिया के कोने कोने से
सुनते हैं हम हाय हुसैन
कितना प्यारा था अब भी है
और रहेगा भी दिन रैन

ऐ भारत के नौनिहाल
अपना लो सब हुसैन की राह
दुनिया में गर अमर नाम
कर जाने की है तुमको चाह



(इमामिया मिशन लखनऊ प्रकाशन नं0 296)